P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-IV* ISSUE-I*September-2016
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भीष्म साहनी के सृजन में 'वाङ्‌चू'

मन्जुला शर्मा
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
टी0 डी0 बी0 कालेज,
रानीगंज, पश्चिम बंगाल

सारांश

राजनीति अपने विस्तृत स्वरूप में मानव जीवन को प्रभावित करती है। किसी देश विशेष की राजनीति में निश्चित राजनैतिक विचारधारा के आधार पर राजनैतिक ढाँचे का निर्माण होता है एवं जागरूक व्यक्ति में अपने देश और शासन के सम्बन्ध में पर्याप्त राजनीतिक चेतना विद्यमान रहती हैं। साथ ही देश के जनसामान्य का यह कर्तव्य होता है कि वह अपने देश के शासन पद्धति, उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, एवं आर्थिक उन्नति आदि के विषय में अपनी रूचि दिखाये। व्यक्ति, समाज और राजनीति तीनों आपस में सम्बन्धित हैं एवं व्यक्ति अपने देशकाल की राजनीति से प्रभावित और संचालित होता है।

भीष्म साहनी के वाङ्‌चू कहानी का मुख्य पात्र वाङ्‌चू राजनीति से दूर रहनेवाला व्यक्ति है। धर्म ही उसके जीवन का एकमात्र उद्‌देश्य है। युगीन राजनीति से तटस्थ रहने के कारण वह गलत समय में गलत निर्णय लेता है फलस्वरूप उसका जवीन त्रासदी में बदल जाता है। भावुक, ईमानदार एवं धार्मिक प्रवृत्ति का मनुष्य राजनीतिक परेशानियों से ग्रस्त होकर पहले बीमार और फिर मृत्यु को प्राप्त करता है। भीष्म साहनी का वाङ्‌चू मनुष्य मात्र है। वह भारत और चीन दोनों देशों का है भी और नहीं भी । उसकी संवेदनशीलता केवल मनुष्य की है। लेखक 'वाङ्‌चू' 'कहानी' द्वारा राजनीति और मानव–मूल्य का विश्लेषण करते हैं।

मुख्य शब्द : राजनीति,मानवता, शासन, देश–विदेश, सरकार, मूल्यबोध

प्रस्तावना

कथाकार भीष्म साहनी की कहानियाँ सामान्य मनुष्य के जीवन की कथा कहती है। सामाजिक विसंगतियों, संकीर्णताओं और विषमताओं की खोज करने वाली उनकी कहानियों का केन्द्र बिन्दु 'व्यक्ति' नहीं बल्कि 'मनुष्य' रहा है और इनकी प्रगतिशील विचारधारा में नारेबाजी से बचकर मनुष्य की संघर्षशीलता पर विश्वास है। भीष्म साहनी का लेखन भारतीय जनमानस के तमाम सुख–दुख, हार–जीत, उसके भीषण त्रासदियों एवं विद्रूपताओं का विश्लेषण करता है। ये प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उन्हें कुछ इस प्रकार स्वीकार करते हैं ''आज प्रेमचन्द की परम्परा को अधिक वैज्ञानिक और कलात्मक आधार देकर आगे बढ़ाने की जरूरत है।''[1] अपनी आत्मकथा 'आज के अतीत' में लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि ''मेरे लिए यही बहुत था कि कहानी में कहानीपन' हो, उसमें जिन्दगी की सच्चाई झलके, वह विश्वसनीय हो, उसमें कुछ भी आरोपित न हो, और वह जीवन की वास्तविकता पर खरी उतरे।''[2] रमाकान्त श्रीवास्तव के अनुसार '' पूँजीवादी व्यवस्था में पनपती विषमता, अमानवीयता, शोषण और चरित्र संकट के विरूद्ध किसी प्रकार का फार्मूलाबद्ध रूमानी दृष्टिकोण न रखकर उनके विद्रूप को उजागर करने का काम भीष्म साहनी की कहानियाँ करती हैं। प्रगतिशील विचारधारा, तीक्ष्ण दृष्टि और विश्लेषण की क्षमता के साथ ही गहरी संवेदनशीलता भीष्म साहनी के लेखन के सहज गुण स्वीकार किये जा सकते हैं।''[3]

वाङ्‌चू कहानी भीष्म साहनी के अपने जीवन अनुभवों से उद्‌धृत एक बौद्ध भिक्षु की मर्मकथा है। वाङ्‌चू एक चीनी बौद्ध शोधकर्ता है जो चीन से भारत आकर यहीं रहने लगता है, और इस प्रकार ''वाङ्‌चू कुछ वर्षों पहले वृद्ध प्रोफेसर तान–शान के साथ भारत आया था। कुछ दिनों तक तो वह उन्हीं के साथ रहा और हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं का अध्ययन करता रहा फिर प्रोफेसर शान चीन लौट गये और वह यहीं बना रहा और किसी बौद्ध सोसाइटी से अनुदान प्राप्त कर सारनाथ में आकर बैठ गया।[4]'' भावुक प्रकृति के वाङ्‌चू को धर्म के अलावा और किसी चीज से मतलब नहीं था। लेखक के शब्दों में ''वह तो बोधिसत्वों'' की मूर्तियों को देखकर गद्‌गद होने आया था। महीने–भर से संग्रहालयों के चक्कर काट रहा था, लेकिन उसने कभी नहीं बताया कि बौद्ध धर्म की किस शिक्षा से उसे सबसे अधिक प्रेरणा मिलती है। न तो वह किसी

तथ्य को पाकर उत्साह से खिल उठता, न उसे काई संशय परेशान करता। वह भक्त अधिक और जिज्ञासु कम था।''[5]

आज के युग में जहाँ हर व्यक्ति अपने समय और देश की राजनीति से प्रभावित रहता है। वाङ्चू न तो भारत की राजनीति से आकर्षित होता है और न ही अपने देश चीन की बदलती हुई राजनीति से। उसकी रूचि महाप्राण और बोधिसत्वों में रहती हैं तथा उसकी कथा एक गम्भीर त्रासद का रूप ले लेती है। राजेश्वर सक्सेना के शब्दों में'' ''वाङ्चू'' कहानी में राजनीति– विमुख बौद्ध–भिक्षु की त्रासदी अंकित हुई है। आज के वातावरण में युगबोध ही व्यक्तित्व विधायक है, व्यक्तिबोध व्यक्तित्वहंता है।''[6]

राजनीतिक उथल–पुथल से दूर बौद्ध संग्रहालय में केन्द्रित रहते हुए वाङ्चू सहज ही नीलम की ओर आकर्षित भी हो जाता है और जल्द ही उसकी ठिठोली को समझ लेता है लेखक यहाँ स्पष्ट करते हैं ''शायद वाङ्चू अपनी स्थिति को जानते–समझते हुए भी एक स्वाभाकि आकर्षण की चपेट में आ गया था। भावुक व्यक्ति का अपने पर कोई काबू नहीं होता। वह पछाड़ खाकर गिरता है, तभी अपनी भूल को समझ पाता है।''[7] वाङ्चू धर्म के अलावा किसी अन्य चीज से मतलब न रखते हुए वर्षों तक स्थिर गति से जीवन जीते हुए कभी तन्त्रज्ञान का अध्ययन करता है तो कभी पुस्तक लिखने की योजना बना रहा होता है और सन्तुष्ट रहता है। समाज और राजनीति से विछिन्न वाङ्चू भारत–चीन के तनावपूर्ण वातावरण में चीन जाने का निर्णय लेता है। रमाकांत श्रीवास्तव इस संदर्भ में कहते हैं ''भारत के बौद्ध धर्म सम्बन्धी अवशेषों और संस्थाओं में घूमने वाला भावुक चीनी बौद्ध वाङ्चू समकालीन जीवन–प्रवाह से बिल्कुल कटा हुआ रहता है। भारत के अत्यंत महत्वपूर्ण राजनैतिक–सामाजिक परिवर्तनों से ही यह निर्लिप्त नहीं रहता बल्कि अपने देश की गतिविधियों से भी अनजान बना रहता है। इसी कारण भारत–चीन के तनावपूर्ण राजनैतिक वातावरण और युद्ध के दौरान वह चीन जाने और फिर भारत वापस लौटने का अव्यावहारिक निर्णय लेता है फलस्वरूप दोनों ही देशों के अधिकारी उसे परेशान करते हैं और अन्त में वह गरीबी और परेशानी के बीच सारनाथ में दम तोड़ देता है।''[8]

भारत, चीन के सम्बन्ध सुधरते हैं तथा बनारस की सड़कों पर लोग वाङ्चू के गले मिलते हैं। अपने को भारत का निवासी मानते हुए वाङ्चू चीन जाता है इस विश्वास के साथ कि लौटकर अपना अध्ययन कार्य करने लगेगा। वाङ्चू चीन का होते हुए भी चीन का नहीं है वह सारे उथल–पुथल से दूर रहते हुए अपने में मग्न रहता है। चीन में वाङ्चू को संदेह की दृष्टि से देखा जाता है तथा प्रश्न किये जाते हैं :

''तुम भारत में कितने वर्षों तक रहे?.....वहाँ पर क्या करते थे?'.....कहाँ–कहाँ घूमे?

तुम क्या सोचते हो, बौद्ध धर्म का भौतिक आधार क्या है? ''द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी की दृष्टि से तुम बौद्ध धर्म को कैसे आँकते हो?'[9]

प्रश्नोत्तर के बाद यह निष्कर्ष निकाला जाता है ''राजनीतिक दृष्टि से हो तुम शून्य हो! बौद्ध धर्म की अवधारणाओं को भी समाजशास्त्र की दृष्टि से तुम आँक नहीं सकते। न जाने वहाँ बैठे क्या करते रहे हो पर हम तुम्हारी मदद करेंगे।''[10] राजेश्वर सक्सेना के शब्दों में ''वाङ्चू'' चीन जाता है लेकिन वहाँ की बदली हुई समाजवादी व्यवस्था में उससे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक प्रश्न पूछे जाते है – बौद्ध–धर्म के भौतिकवादी स्वरूप पर प्रश्न पूछे जाते हैं। वह मौन रहता है।''[11]

वाङ्चू भारत वापस आता है जहाँ सीमा पर से ही उसे पुलिस पकड़ लेती है और पूछताछ शुरू होती है तथा''सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उसके नाम के आगे टिप्पणी लिख दी कि इस आदमी पर नजर रखने की जरूरत है''।[12]

वाङ.चू को धर्म के अतिरिक्त किसी और चीज से मतलब नहीं था, जबकि कहानी के मूल में है ''सामाजिक शक्तियों को समझे बिना तुम बौद्ध धर्म को भी कैसे समझ पाओगे? ज्ञान का प्रत्येक क्षेत्र एक–दूसरे से जुड़ा है, जीवन से जुड़ा है। कोई चीज जीवन से अलग नहीं है। तुम जीवन से अलग होकर धर्म को भी कैसे समझ सकते हो।''[13] इस सन्दर्भ में नन्दकिशोर नवल का विचार है '' यह कहानी धार्मिक स्वतंत्रता के मूल्य की स्थापना करती है, लेकिन वैसे धर्म की आलोचना भी करती है, जो समाज और राजनीति से विछिन्न होता है।''[14]

भारत–चीन युद्ध के साथ वाङ्चू को कटघरे में ला खड़ा किया जाता है। उसके शोधपत्र और किताबें जब्त कर ली गयीं और अब उसे महीने में एक बार के स्थान पर सप्ताह में, एक बार पुलिस स्टेशन में जाकर हाजिरी देने को कहा गया। उसके अनुदान को समाप्त कर देने की बात कही जाती है। लड़ाई समाप्त होने और लगभग एक वर्ष बाद'' वाङ्चू को उसके कागज वापस किये जाते हैं। बीमार वाङ्चू की स्थिति कुछ इस प्रकार होती है ''काँपती टाँगों से वाङ्चू पुलिन्दा बगल में दबाये लौट आया। कागजों में केवल एक पूरा निबन्ध और कुछ टिप्पणियाँ बची थीं।

उसी दिन से वाङ्चू की आँखों के सामने धूल उड़ने लगी थी।''[15]

इस प्रकार वाङ्चू मृत्यु की ओर अग्रसर होता है।

नन्द किशोर नवल के अनुसार ''गलत राजनीति दो देशों के बीच के मानवीय और सांस्कृतिक सम्बन्ध को नहीं देख पाती है, जबकि राजनीति का आधार इसी तरह का सम्बन्ध होना चाहिए। वाङ्चू वस्तुतः न चीनी था, न भारतीय। वह मात्र मनुष्य था और इसलिए वह चीनी भी था और भारतीय भी। इस बात को गलत राजनीति ने नहीं समझा और मानव–मूल्य की उपेक्षा की गयी।'[16] 'वाङ्चू' के लिए रमाकान्त श्रीवास्तव कहते हैं ''लेखक की सहानुभूति ना तो स्वप्नदर्शी वाङ्चू से है और ना राजनैतिक पटल पर होने वाले उन परिवर्तनों के प्रति जो वाङ्चू जैसे निरीह, भावुक समर्पित और ईमानदार शोधकर्ता की मृत्यु के वस्तुतः जिम्मेदार है''।[17] जबकि राजेश्वर सक्सेना यह मानते हैं कि ''वाङ्चू'' में स्पष्ट है कि ''जीवन और समाज से कटकर दर्शन और मृत्यु में

कोई अन्तर नहीं होता। ''वाङ्चू पहले भी अकेला था, गुमनाम था, मरने के बाद कोई हरकत नहीं दे सका। वाङ्चू जीवन निषेध की एक प्रवृत्ति है, जीवनेच्छा की प्रति–स्थापना है।''[18]

भीष्म साहनी की वाङ्चू कहानी में केवल 'वाङ्चू' की त्रासदी ही नहीं बल्कि उसका व्यक्तित्व अपनी एक–एक सूक्ष्म रेखा के साथ उभरकर सामने आया है। यह लेखक की गहन और व्यापक दृष्टि का प्रभाव है कि मानवता के प्रति इतनी–गहरी सहानुभूति को वे सफलता के साथ अंकित करते हैं। यही नहीं भारत–चीन के सामाजिक–राजनीतिक परिवेश को संयम और तटस्थता के साथ चित्रित कर वाङ्चू के लिए संवेदना उत्पन्न करते हैं। अतः वाङ्चू की कहानी खत्म न होकर फिर से जीवन में विस्तार पाती है।

उपसंहार

वाङ्चू कहानी का केन्द्र चीनी बौद्ध भिक्षु 'वाङ्चू' शोधकार्य हेतु चीन से भारत आकर यहीं रहने लगता है भावुक प्रकृति का वाङ्चू महाप्राण के जन्मस्थान लुम्बिनी की यात्रा नंगे पाँव सारा रास्ता हाथ जोड़े कर चुका है और धर्म के अतिरिक्त उसे अन्य किसी चीज से मतलब नहीं। आज जब प्रत्येक व्यक्ति राजनैतिक एवं सामाजिक वातावरण एवं देश की गतिविधियों से संयुक्त होता है वाङ्चू इन सबसे विमुख है वह भारत और चीन के राजनीतिक उथल–पुथल से तटस्थ बौद्ध धर्म के अवशेषों, संग्रहालयों, पुस्तक रचना एवं तन्त्रज्ञान में व्यस्त रहता है। भारत चीन के तनावपूर्ण माहौल में वह चीन जाता है फिर भारत लौटता है और दोनों देशों में संदेह का पात्र बनता है। वाङ्चू के शोधपत्रों और किताबों को जब्त करके उसकी कड़ी निगरानी की जाती है और बीमार और निराश वाङ्चू मृत्यु को प्राप्त करता है।

उद्देश्य

लेखक ने तटस्थता के साथ 'वाङ्चू' की विभिन्न घटनाओं का वर्णन किया है। वाङ्चू मात्र मनुष्य था जिसे न तो चीन ने समझा और न भारत ने। तथा मानव–मूल्य की उपेक्षा हुई। भीष्म साहनी साधारण लोगों के कथ्य को अपनी रचना का आधार बनाते हैं एवं 'वाङ्चू' की संवेदनशीलता को उन्होंने सूक्ष्मता के साथ उभारा है।

इस प्रकार वाङ्चू कहानी मानव–मूल्य एवं गहरे रचनात्मक दायित्व–बोध को स्वीकार करती है। और यही भीष्म साहनी की सृजनात्मकता भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सक्सेना राजेश्वर/ठाकुर प्रताप, ''भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना,'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005 पृ. 13
2. साहनी भीष्म, 'आज के अतीत,'' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2003 पृ. 210
3. सक्सेना राजेश्वर/ठाकुर प्रताप, 'भीष्म साहनी,' व्यक्ति और रचना,' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005, पृ. 95
4. साहनी भीष्म, 'वाङ्चू', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1978 पृ.94
5. वही पृ. 94
6. सक्सेना राजेश्वर /ठाकुर प्रताप, 'भीष्म साहनी' व्यक्ति और रचना', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005 पृ.87
7. साहनी भीष्म, 'वाङ्चू', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पृ.100
8. सक्सेना राजेश्वर/ठाकुर प्रताप, 'भीष्म साहनी' व्यक्ति और रचना वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005 पृ.97
9. साहनी भीष्म, 'वाङ्चू', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978 पृ.106
10. वही पृ.106
11. सक्सेना राजेश्वर /ठाकुर प्रताप 'भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005 पृ. 88
12. साहनी भीष्म, 'वाङ्चू' राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978 पृ. 108
13. वही पृ. 102
14. सक्सेना राजेश्वर/ ठाकुर प्रताप, 'भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005 पृ. 104
15. साहनी भीष्म, 'वाङ्चू', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978 पृ.115
16. सक्सेना राजेश्वर /ठाकुर प्रताप 'भीष्म साहनी व्यक्ति और रचना' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005 पृ.104
17. वही पृ. 97
18. वही पृ. 88